Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, DEC-JAN, 2020, VOL- 8/37

अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों की समाज सम्पर्क क्षमता तथा सामाजिक कार्यक्रम में उनका सहयोग

तक्षा शंभरकर, Ph. D.

असिस्टेंट प्रोफेसर(महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ,वर्धा)

Taksha100@gmail.com

Abstract

आधुनिक जगत में जहाँ शिक्षा विद्यालयों में दी जाती है वहीं प्राचीन काल में शिक्षा समाजिक तत्वों से प्रभावित थी। आचार्य लोग आश्रमों मे शिष्यों को शिक्षा देते थें किंतु वह शिक्षा सर्वथा समाज के हित के लिए ही थी। सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर ही गुरु शिक्षा देते थे। और शिष्य भी गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान को इस तर आत्मसात करते थे कि जैसे वे प्रवचन स्वंय ईश्वर उन्हें दे रहे हैं। गुरुओं में व शिष्यों में भी आदर्शवादिता का प्रभाव था जिससे समाज नियमबद्धता में जीता था। शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्तित्व के विकास पर बल देना है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है समाज से परे उसका कोई अस्तित्व ही नही है। वह समाज में ही पैदा होता है। उसी में रहता है। उसी में अपनी योग्यताओं का विकास करता है और उसी में अपने और अपने परिवार का पालन पोषण करता है।ऐसे में जो अध्यापक विद्यालय के अध्यापक जो भावी अध्यापकों की पीढ़ी को तैयार कर रहे ऐसे अध्यापकों मैं समाज के प्रति क्या अपनेपन की भावना है ? यह अध्यापक समाज के प्रति अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक है ?क्या यह समाज के परेशानियों को कम करने हेतु योगदान दे रहे है यह जानना बेहद जरुरी है इसलिए प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा यह प्रयास किया गया है |

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

पार्श्वभूमी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ती और समाज एक दुसरे से घनिष्ठ रूप से संबधित है। एक के बिना दुसरे का कोई अस्तित्व नही है। व्यक्तियों के अभाव से समाज का कोई महत्व नहीं है और समाज के अभाव में व्यक्ती जिंदा नही रह सकता अपना विकास नही कर सकता। मानव शिशु में जन्म से ही सामाजिक गुण नही पाए जाते है। ये गुण उसे सिखाए जाते है। समाज विद्यालय का एक लघु रूप है और विद्यालय ही समाज का निर्माता कहलाता है। समाज से अलग रहकर मनुष्य का कोई अस्तित्व

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नहीं होता। इस प्रकार समाज व व्यक्ति के बीच बहुत गहरा रिश्ता है। ये दोनों ही एक दूसरे पर निर्भर हैं। अतः शिक्षा द्वारा व्यक्ति और समाज दोनों का हित साधन होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति एंव समाज में ऐसे गुण अथवा योग्यताऐं निर्मित होती हैं। जिससे समाज विकास कर सकता है। इसी धारणा से सामाजिकता वादी प्रवृति का विकास हुआ और यही सामाजिकतावादी प्रवृति बालकों में सामाजिक गुणों का विकास करती है जिससे वे समाज की उन्नति में अपना सहयोग दे सकते हैं।

शिक्षा का समाजिक आधार

शिक्षा के सामाजिक आधार का अर्थ यह है कि शिक्षा की व्यवस्था समाज की आवश्यकताओं,आंकाक्षाओं और आदर्शों के आधार पर की जानी चाहिए। शिक्षा के दवारा बालकों में ऐसे सामाजिक गुणों को विकसित किया जाना चाहिए जिससे वे अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें, अधिकारों का उपभोंग कर सकें और समाज तथा देश के योग्य, कुशल, जागरुक और समर्पित नागरिक बन सकें।

NCERT **ने अध्यापकों के लिये** 10 **क्षमताएँ आवश्यक बताई है, वे निम्न प्रकार से है।**

1. **संदर्भ क्षमता**
2. **संबोध क्षमता**
3. **आशय ज्ञान क्षमता**
4. **शैक्षिक व्यवहार क्षमता**
5. **शैक्षिक उपक्रम क्षमता**
6. **शैक्षिक सामग्री निर्माण एवं उपयोग क्षमता**
7. **मूल्यमापन क्षमता**
8. **व्यवस्थापन क्षमता**
9. **पालक संपर्क क्षमता**
10. **समाज संपर्क क्षमता**

1. **संदर्भ क्षमता**

अध्यापकों के लिए उन्हें अपने विषय का संम्पूर्ण ज्ञान आवश्यक होता है। और उस ज्ञान को स्वंय जान लेने के पश्चात उनसे स्वयं प्रेरित होकर औरों को अथवा विद्यार्थीयों को प्रेरित करने की क्षमता अर्थात संदर्भ क्षमता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. **संबोध क्षमता**

अपने ज्ञान को विविध विचार प्रवाह, पद्धती, तंत्र तथा संज्ञा संबधी पूर्ण वैचारिक स्पष्टता अर्थात संबोध क्षमता है।

3. **आशय ज्ञान क्षमता**

शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये पाठ्यक्रम मे निहित विषय, पाठांश और विद्यार्थीओं को दिया जाने वाला अध्ययन अनुभव संबधी गहरा ज्ञान अर्थात आशय ज्ञान क्षमता है।

4. **शैक्षिक व्यवहार क्षमता**

शैक्षिक उद्देश साध्य करने के लिये दैनंदिन अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में शिक्षक - विद्यार्थी, विद्यार्थी - विद्यार्थी, विद्यार्थी - साहित्य तथा विद्यार्थी - परिसर में परस्पर आंतरक्रिया अर्थपूर्ण करने के लिये विविध पध्हतियाँ उपक्रमों तथा तंत्रो को एकात्म रूप में प्रभावी उपयोग का कौशल्य अर्थात शैक्षणिक व्यवहार क्षमता है।

5. **शैक्षिक उपक्रम क्षमता**

शैक्षिक उपक्रम पुर्ति के लिये पोषक अध्ययन विषयक सहविद्यालयीन उपक्रमों का चतुरता से नियोजन करके सुत्रबध्द एवं प्रभावी कार्यान्वयन करने का कौशल, शैक्षिक उपक्रम विषयक क्षमता है।

6. **शैक्षिक सामग्री निर्माण एवं उपयोग क्षमता**

शैक्षिक उद्देश साध्य करने के लिये अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में उपलब्ध परिसर, साहित्य और कलापूर्ण ढंग से तयार किये गये शैक्षिक साधनो का अर्थपूर्ण उपयोग करने की क्षमता ही शैक्षिक साहित्य निर्मिती तथा उपयोग क्षमता है।

7. **मूल्यमापन क्षमता**

अभ्यासक्रम के सर्व सामान्य उद्देश कितने पैमाने में साध्य हुए है तथा निहित कि गई क्षमताएं विद्यार्थीयों में कितने पैमाने में विकसित हुई है। यह निरन्तर एवं पूर्णः जांच - पडताल करके देखने की मूल्यांकन क्षमता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

8. **व्यवस्थापन क्षमता**

उपलब्ध मनुष्य बल का सहज एवं उत्स्फूर्त सहभाग प्राप्त करके एवं इनके जरिए साधनों का उचित उपयोग करके कम से कम समय, श्रम तथा खर्च में शैक्षिक उद्देश दर्जेदार स्तर तक प्राप्त करने का कौशल्य व्यवस्थापन क्षमता है।

9. **पालक संपर्क क्षमता**

अभ्यासक्रम के उद्देश साध्य करने के लिये तथा विद्यार्थीयों में क्षमता पूर्ण विकसित करने के लिये आवश्यक सिध्द होने वाला पालकों द्वारा सहकार्य एवं सहभाग व्यक्तिगत तथा एकत्रित रूप मे प्राप्त करा लेने कि क्षमता है।

10. **समाज संपर्क क्षमता**

विद्यालय की सर्वांगीण प्रगती समाज में जागृति, अपनेपन की भावना तथा जिम्मेंदारी की भावना निर्माण करके सहकार्य तथ सहभाग प्राप्त करा लेने की क्षमता समाज संपर्क क्षमता है।

समाज

समाज वह इकाई है जो व्यक्ति को व्यक्ति से, एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी से एक परिवार को दुसरे परिवार से जोड़ती है तथा जरूरत पडने पर उनके सुख - दुख का भी ध्यान रखती है। समाज में व्यक्ति विषेश के संस्कार, शिक्षा, मूल्य एंव धर्म इत्यादि जैसे तत्व समाविष्ट होते है। समाज विभिन्न जातियों तथा धर्मो को जोडने वाली कडी है जिससे संबधित होकर समस्त संसार अपने विभिन्न क्रियाकलापों को पूर्ण करता हैं| मनुष् एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज से अलग होकर नही रह सकता। जिसकी वजह से समाज अपने आप में ही एक बहुत बडा जन समूह है। जिसका विघटन हम उनके भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर कर सकते है |

विदयालय तथा समाज का संबंध

विदयालय और समाज शिक्षा की महत्वपूर्ण संस्थाए हैं। विदयालय शिक्षा की औपचारिक संस्था है और समुदाय शिक्षा की अनौपचारिक संस्था है। विदयालय को समाज की रुपरेखा और आवश्यकता का

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन करना चाहिए। जो विभिन्न विधियों द्वारा किया जा सकता है। सर्वेक्षण कार्यक्रमो द्वारा समाज की आवश्यकताओं का अध्ययन किया जा सकता है। पाठयक्रम का विकास अच्छे सर्वेक्षण कार्यक्रमों द्वारा किया जाना चाहिए। विद्यालय को विदयार्थीयों की उचित शिक्षा के लिए उद्देश्यों तथा आदर्शों को समुदाय की उचित क्रियाओं द्वारा निर्धारित करना चाहिए। जिससे समाज की प्रगति हो। जिस समाज के सदस्य उचित शिक्षा -दीक्षा नही पाते उस समाज की प्रगति के विषय में कुछ नही कहा जा सकता। नयी पीढी की शिक्षा की व्यवस्था करना प्रत्येक समाज का कर्तव्य है। विदयालय ऐसे कुशल व्यक्तियों का निर्माण करते है जो समुदाय की आवश्यकताओं में योगदान देते है। समाज और विद्यालय के बीच दोहरे मार्ग का संबंध होता है। एक मार्ग से समाज की समस्याऐं और कठिनेयाँ विद्यालय में अध्ययन के लिए आती हैं और दूसरे मार्ग से विदयालय में ढूंढे गए ज्ञान और ताजे अनुभव समाज में आते हैं। जिससे समाज का स्तर ऊँचा उठता है।

समाज संपर्क

प्रत्येक समाज की अपनी निजी संस्कृति होती है। स्कूल के वातावरण में पढ़ने खेलने - कूदने तथा नाना प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हुये बालक को अपने समाज की संस्कृति का ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है। स्कूल के जीवन दर्शन, उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम का बालकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव से प्रभावित होकर जैसे नागरिकों का निर्माण होगा। वैसा ही समाज बनेगा। अतः समाज को अच्छे अथवा बुरे नागरिकों को बनाने में स्कूल का गहरा प्रभाव होता है। इसी लिए बालक को सिखाने वाले शिक्षकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक और सामाजिक परिवर्तन में आत्मा और शरीर जैसा सम्बन्ध है। शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन के उक्त सभी प्रकार के दिशाओं को दृष्टी में रखते हुए ऐसी दिशा में मोड़ना चाहिए जो समस्त समाज के लिए कल्याणकारी है। उसे जनता प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर ले। इसलिए शिक्षक का समाज से सम्पर्क होना अतिशय आवश्यक है। शिक्षकों को समाज और राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समाज मे भावात्मक एकता विकसित करने के लिये शिक्षक का मुख्य स्थान है। इस दृष्टी से ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जिनमें स्वयं भी यह भावना विकसित हो चुकी हो। इसी तरह से समाज में अन्तर सांस्कृतिक भावना का विकास करने में भी शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्तर सांस्कृतिक भावना केवल वही शिक्षक विकसित कर सकता है, जिसका अपने विषय के ज्ञान के अतिरिक्त अन्य सभी समाज की संस्कृती का पूर्ण ज्ञान हो। वह स्वयं समाज से सम्पर्क बनाये रखता है। समाज में होने वाले कार्यक्रमों में सहभागी होता है। क्योंकी मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही जन्म लेता है और समाज में ही विकसित होता है। विना समाज के व्यक्ति का कोई जीवन ही नही है। यही कारण है कि प्रत्येक देश तथा काल में व्यक्ति ने अपने मित्रों तथा साथियों के सम्पर्क में रहने की इच्छा प्रकट की है। मानव ने अपने सामाजिक विकास में सदैव मिलता सहयोग एंव नेतृत्व की इच्छा प्रकट की है। यह इच्छा केवल सामाजिक सम्पर्क के व्दारा ही पूरी हो सकती है। शिक्षक अगर समाज के साथ सम्पर्क बनाये रखे तो समाज में आने वाली समस्या और उस समस्या का शिक्षा के व्दारा समाधान किस तरह से किया जाए इसका ज्ञान होता है। अगर शिक्षक अपने खोये हुए मान व प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करना चाहता है, तो उसे बदलते हुए समाज और उसकी आवश्यकताओं को पूरी तरह से समझ कर समाज के परिवर्तनों में अपना आवश्यक योगदान देना चाहिए।

प्रस्तुत अनुसंधान की आवश्यकता और महत्व

किसी भी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिए सबसे आवश्यक तत्व शिक्षा है। भारत 2020 **तक एक विकसित राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में है। परंतु अभी हमारे देश में** 30 **करोड़** 50 **लाख लोग ऐसे है जिन्हें साक्षर बनाने की जरुरत है। मानसिक और शारीरिक रुप से अक्षम बच्चो की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे विद्यालय और कॉलेजोंसे निकलने वाले छात्रों की योग्यता और संख्या पर ही राष्ट्र के पुनः निर्माण के उस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी जिसका प्रमुख लक्ष्य हमारे रहन सहन और समाज के स्तर को ऊँचा उठाना है। ये अनुसंधान ही हमारी भावी पीढ़ी के लिए एक मार्गदर्शन रुपी स्त्रोत होते हैं जिसके बल पर वे अपनी कार्यकुशलताओं और योग्यताओं को बखूबी निभा सकते हे।**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कक्षा 12 **वी पास कर जिन छात्रों में भी शिक्षाक्षेत्र में रुचि होती है वे क्रमशतः अध्यापक विदयालयों में दाखिला लेते हे। जैसा कि विदित है परिवर्तन यह प्रकृति का नियम है। पुरानी पीढी के बच्चों में और आज की आधुनिक जगत के बच्चों में जो फर्क नजर आता हे उसे हम अनदेखा नही कर सकते हैं। आज का विद्यालय अनेक सुविधाओं से युक्त है। अगर वहीं हम देखें तो पहले की शिक्षा पध्दति खुले आकाश के नीचे ही विद्यार्थियों को दी जाती थी। किंतु आज के आधुनिक बच्चों की मांग भी आधुनिक है। ऐसे में ये अनुसंधान ही अध्यापक विदयालय में पढ रहे भावी अध्यापकों को योग्य अध्यापकों द्वारा योग्य मार्गदर्शन मिलाना आवश्यक है ,इसलिए क्या यह अध्यापक अपेक्षा पर खड़ा उतरते है यह देखना जरुरी है |**

समस्या का विधान

''अध्यापक विद्यालय के अध्यापको की समाज सम्पर्क क्षमता तथा सामाजिक कार्यक्रम में उनका सहयोग ''

कार्यात्मक व्याख्या

अध्यापक विद्यालय

अध्यापक विद्यालय कक्षा 12 **वीं के बाद का शिक्षक - प्रशिक्षणार्थी का व्यावसायिक अभ्यासक्रम है।**

अध्यापक

जो विद्यालय में अध्यापन कार्य करते है। वे अध्यापक विद्यालय के अध्यापक कहलाते है।

समाज सम्पर्क क्षमता

विद्यालय की सर्वांगीण प्रगति के लिये समाज में जागृति, अपनेपन की भावना तथा जिम्मेदारी की भावना निर्माण करके सहकार्य तथा सहभाग प्राप्त करा लेने की क्षमता ही समाज संपर्क क्षमता है।

सामाजिक कार्यक्रमों में सहयोग

समाज के अंतर्गत होने वाले विभिन्न सामाजिक कार्य में योगदान प्रदान करना, अर्थात सामाजिक कार्यक्रम में सहयोग करना है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य

1. **अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक कार्यक्रम में सहभाग का शोध करने हेतु मापनी तैयार करना।**

2. **अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों की समाज संपर्क क्षमता का अभ्यास करने हेतु मापनी तैयार करना।**

3. **अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों की समाज संपर्क क्षमता का अध्ययन करना।**

4. **अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों और अध्यापिकाओं की समाज संपर्क क्षमता की तुलना करना।**

व्याप्ती

प्रस्तुत संशोधन की व्याप्ती नागपूर शहर है |

मर्यादा

1. **प्रस्तुत अनुसंधान नागपूर शहर के अध्यापक विद्यालयों के अध्यापकोण तक सीमित है।**

अनुसंधान पध्दती

प्रस्तुत अनुसन्धान के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान पध्दति का प्रयोग किया गया |

जनसंख्या व न्यादर्श

प्रस्तुत अनुसंधान में नागपुर शहर के अध्यापक विद्यालयों मे अध्यापन का कार्य करने वाले अध्यापको का समावेश जनसंख्या में किया गया है।

प्रस्तुत अनुसंधान में न्यादर्श के रूप में नागपुर शहर के ही अध्यापक विद्यालय के कुल अध्यापकों मे से सिर्फ 100 **अध्यापकों का चुनाव यादृच्छिक पध्दती से किया गया है। जिनमें** 50 **अध्यापक व** 50 **अध्यापिका का समावेश है।**

अनुसधांन के साधन

प्रस्तुत अनुसंधान के साधन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत अनुसंधान के लिये सामाजिक कार्यक्रम सहयोग मापनी तथा सामाज संपर्क क्षमता मापनी की प्रस्तुत अनुसंधान साधन के रुप में रचना की गयी है। प्रस्तुत अनुसंधान में अध्यापक विद्यालय के अध्यापको की समाज सम्पर्क क्षमता तथा सामाजिक कार्यक्रमों में सहयोग की जांच करने के लिये अनुसंधानकर्ती ने मापनी में विविध विधान तैयार किये जिसके द्वारा अध्यापकों की सामाजिक कार्यक्रम सहयोग तथा समाज संपर्क क्षमता की जाँच की जा सके |

साधन नं. 1

सामाजिक कार्यक्रम सहयोग मापनी

अनुसंधानकर्ती ने इस मापनी मे 15 **विधान सामाजिक कार्यक्रम में सहयोग पर दिये गये है। जिसके प्रतिसाद** 3 **बिंदु श्रेणी में जैसे हमेषा, कभी-कभी, कभी नही में लिये गये है। इस मापनी की विश्वनियता** 0.75 **प्राप्त हुई।**

साधन नं. 2

सामाज संपर्क क्षमता मापनी

अनुसंधानकर्ती ने इस मापनी में 1४ **विधानों का चुनाव किया । जिसके प्रतिसाद तीन बिन्दु श्रेणी मे जैसे हमेशा, कभी-कभी, कभी नही में लिये गये है। इस मापनी की विश्वनियता** 0.75 **प्राप्त हुई। गुणों को अंकन कुंजी मापनी मे हमेशा इस बिंदू श्रेणी को** 2 **अंक कभी-कभी श्रेणी को** 1 **अंक तथा कभी नही श्रेणी को शून्य** (0) **अंक दिये गये है।**

अनुसन्धान की कार्यवाही तथा प्रदत्त संकलन पध्दती

प्रस्तुत अनुसंधान में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों की समाज संपर्क क्षमता तथा सामाजिक कार्यक्रम में उनका सहयोग की जानकारी प्राप्त करने के लिये मापनी की रचना की गई है। चयनित किये हुए अध्यापक विद्यालयों के प्राचार्यो की अनुमति से प्रत्येक विद्यालयों के अध्यापकों को समाज संपर्क क्षमता मापनी तथा सामाजिक कार्यक्रमों मे सहयोग मापनी वितरित की गई। प्रतिसाद लिखने के लिये 1 **सप्ताह का समय दिया गया।** 8 **दिन बाद मापनीयां वापस ली गयी। गुणांकन (मूल्यांकन)**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

100 **अध्यापकों का समाज सम्पर्क क्षमता तथा मसाजिक कार्यक्रम में सहभाग मापनी के प्राप्त प्रतिसाद का मूल्यांकन गुणांकन कुजी के द्वारा किया गया।**

विश्लेषण व अर्थनिर्वचन

प्राप्त आंकड़ों के सारणीकरण करने के बाद आंकडो का निरीक्षण किया गया जिसमें कुछ संख्याओं में साम्य है, व कुछ स्थान पर अंतर है। ऐसे ध्यान मे आता है। प्रस्तुत विधान के लिये प्रतिशत (शेकडेवारी) इस संख्याशास्त्रीय तंत्र का उपयोग किया गया। उपलब्ध जानकारी व संकलन करने प्रतिशत (शेकडेवारी) इस तंत्र का प्रयोग करके जानकारी का अर्थनिर्वचन किया गया। इस अनुसंधान में संकलित जानकारी का विश्लेषण व अर्थनिर्वचन किया गया। जो अलग-अलग सारणी के आधार पर है।

उद्देश्य क्रं. 1

अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का सामाजिक कार्यक्रम में सहभाग का शोध करने हेतु मापनी तैयार करना।

उद्देश्य क्रं. 2

अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों की समाज संपर्क क्षमता का अभ्यास करने हेतु मापनी तैयार करना।

उद्देश्य क्रं. 3

अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का सामाजिक कार्यक्रम में सहभाग का अध्ययन करना.

अध्यापकों का सामाजिक कार्यक्रम में सहभाग का अध्ययन करने के लिए सामाजिक कार्यक्रम सहयोग मापनी का उपयोग किया गया है। 15 विधान दिये गये थे। उनमें प्राप्त प्रतिसाद को 3 बिन्दु श्रेणी में अंकित किये गये है। प्रत्येक विधान का विश्लेषण निम्नलिखित है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारणी क्र.1

अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का सामाजिक कार्यक्रम में सहभाग का शोध करने हेतु मापनी का विश्लेषण

अनु क्र.	वधान	हमेशा	कभी-कभी	कभी नही	अध्यापक संख्या
1	वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागी होते है।	25	70	05	100
2	वृक्षसंवर्धन कार्यक्रम में सहभागी होते है|	25	70	05	100
3	स्वच्छता अ भयान में सहभागी होते है।	30	65	05	100
4	साक्षरता अ भयान में सहभागी होते है।	40	60	00	100
5	अनाथो उपाहिजों रुग्णो की सहायता करते है।	05	50	45	100
6	वृद्धों की सेवा करते है।	25	45	30	100
7	व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में सहभागी होते है।	25	73	02	100
8	समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता निर्माण करते है।	30	70	00	100
9	सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत आपत्ति के समय नि ध इक ा करते है।	55	45	00	100
10	सार्वजनिक सेवाभावी संस्थाओं के कार्य मे सहायता करते है।	30	65	05	100
11	अंध श्रद्धा निर्मूलन के लये कार्यक्रमों	20	72	08	100

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

	का आयोजन करते है।				
12	सामाजिक उत्सवों में सम्मि लत होते है।	45	55	00	100
13	व वध स्पर्धाएं आयोजित करते है।	20	80	00	100
14	प्रदर्शनी मनोरंजन के कार्यक्रम आयोजित करते है।	45	55	00	100
15	मतदान प्र क्रया में भाग लेते है।	95	05	00	100

अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का सामाजिक कार्यक्रम में सहभाग का शोध करने हेतु मापनी का विश्लेषणात्मक आलेख

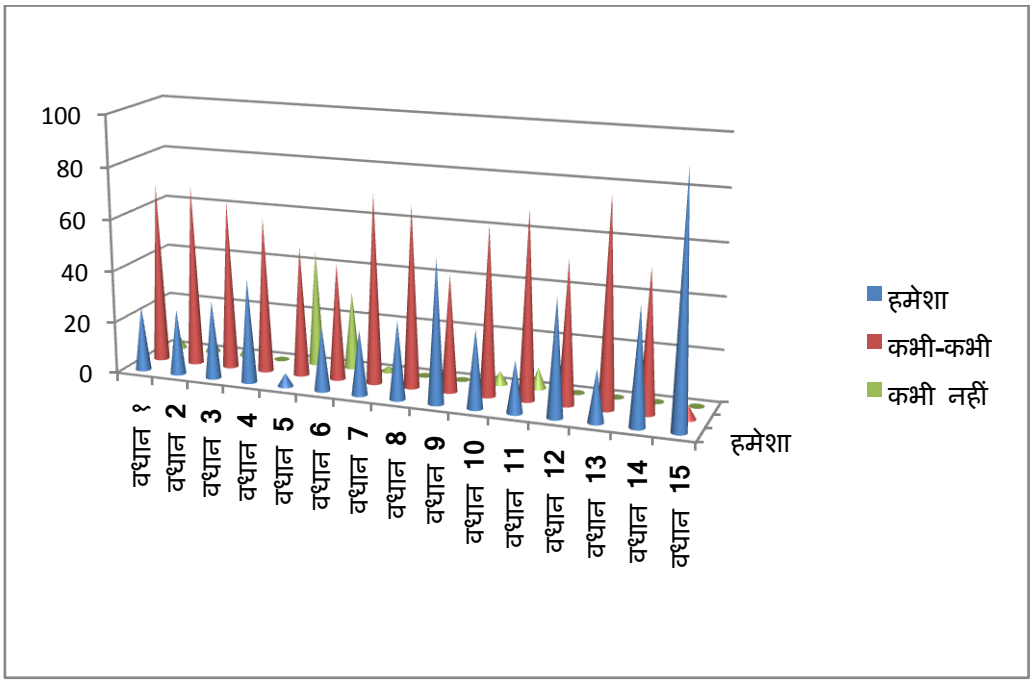

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्लेषण व अर्थनिर्वचन

१.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागी होते है'। इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 25%, **कभी कभी** 70% **और कभी नही के लिये** 5% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागी होते है।**

२. उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'वृक्षसंवर्धन कार्यक्रम में सहभागी होते है', इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा 25% **कभी कभी** 70% **और कभी नही के लिये** 5% **है। इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही वृक्षसंवर्धन कार्यक्रम में सहभागी होते है|**

३.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'स्वच्छता अभियान में सहभागी होते है'।'इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 32% **कभी कभी** 65% **और कभी नही के लिये** 3% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही स्वच्छता अभियान में सहभागी होते है।**

४.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'साक्षरता अभियान में सहभागी होते है'।इस 'विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 40% **कभी कभी** 60% **और कभी नही के लिये** 0% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही स्वच्छता अभियान में सहभागी होते है।**

५.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'अनाथो उपाहिजों रुग्णो की सहायता करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 5% **कभी कभी** 50% **और कभी नही के लिये** 45% **है। इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही अनाथो उपाहिजों रुग्णो की सहायता करते है|**

६.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'वृद्धों की सेवा करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 25% **कभी कभी** 45% **और कभी नही के लिये** 30% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही वृद्धों की सेवा करते है।**

७.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में सहभागी होते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 25% **कभी कभी** 73% **और कभी नही**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के लिये 2% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में सहभागी होते है।**

८.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता निर्माण करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 30% **कभी कभी** 70% **और कभी नही के लिये** 0% **है। इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कभी कभी ही समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता निर्माण करते है। ९.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत आपत्ति के समय निधि इकट्ठा करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये** 55% **कभी कभी** 45% **और कभी नही के लिये** 0% **है।इसका अर्थ यह है कि सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत आपत्ति के समय निधि इकट्ठा करते है। १०.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'सार्वजनिक सेवाभावी संस्थाओं के कार्य मे सहायता करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये** 30% **कभी कभी** 65% **और कभी नही के लिये** 5% **है। इसका अर्थ यह है कि सार्वजनिक सेवाभावी संस्थाओं के कार्य मे सहायता करते है।**

११.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'अंध श्रद्धा निर्मूलन के लिये कार्यक्रमों का आयोजन करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 20% **कभी कभी** 72% **और कभी नही के लिये** 8% **है। इसका अर्थ यह है कि अंध श्रद्धा निर्मूलन के लिये कार्यक्रमों का आयोजन करते है।**

१२.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का' सामाजिक उत्सवों में सम्मिलित होते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 45% **कभी कभी** 55%**और कभी नही के लिये** 0% **है।इसका अर्थ यह है कि सामाजिक उत्सवों में सम्मिलित होते है।**

१३.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'विविध स्पर्धाएं आयोजित करते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 20% **कभी कभी** 80% **और कभी नही के लिये** 0% **है। इसका अर्थ यह है कि विविध स्पर्धाएं आयोजित करते है।**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

१४.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'प्रदर्शनी मनोरंजन के कार्यक्रम आयोजित करते 'है।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 45% **कभी कभी** 55% **और कभी नही के लिये** 0% **है।इसका अर्थ यह है कि प्रदर्शनी मनोरंजन के कार्यक्रम आयोजित करते है।**

१५.उपर निर्देशित सारणी में अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों का 'मतदान प्रक्रिया में भाग लेते है'।इस विधान पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा के लिये 95% **कभी कभी** 5% **और कभी नही के लिये** 0% **है।इसका अर्थ यह है कि मतदान प्रक्रिया में भाग लेते है।**

साधन नं. 2 **सामाज संपर्क क्षमता मापनी**

अः अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना के मपिका का विश्लेषण

अ.क्र.	प्रश्न	हमेशा	कभी-कभी	कभी नही
1	अंधश्रद्धा निर्मूलन के लए कार्यक्रम का आयोजन कया है?	30	30	40
2	सामाजिक उत्सवों मे सम्मि लत होते है?	60	30	10
3	व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में सहभाग लया है?	10	30	60
4	आरोग्य संबधी मदत की है?	50	20	30
5	स्वास्थ श वरों में सहायता प्रदान की है?	20	50	30
6	स्वच्छता कार्यक्रम चलाए है?	60	30	10
7	स्वास्थ संबधी जानकारी दी हैं?	30	60	10
8	ग्रामीण समस्याओं के निवारण हेतु ग्रामीणों का सहयोग दिया हैं?	20	70	10

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अः अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना के मपिका का विश्लेषणात्मक आलेख

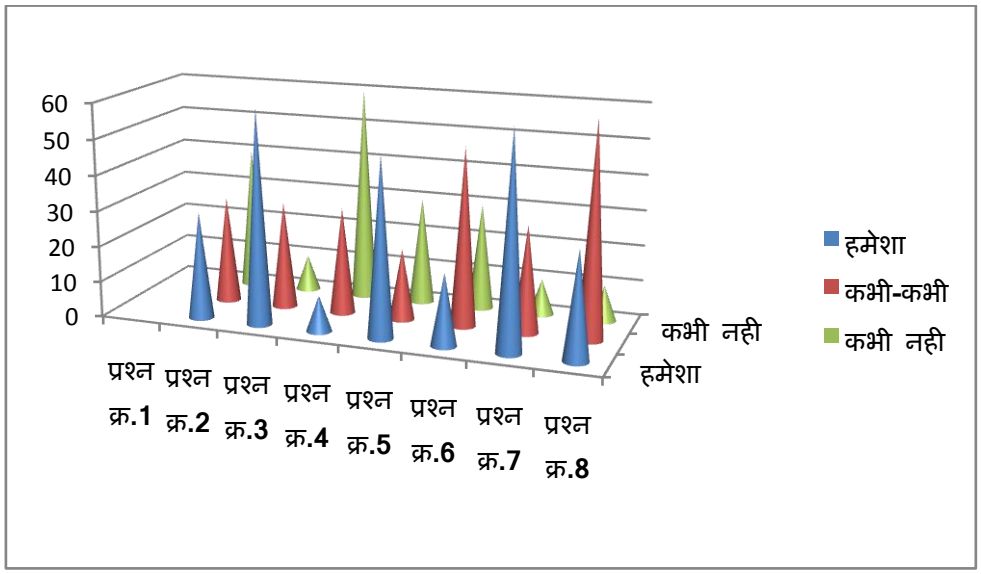

विश्लेषण व अर्थनिर्वचन

1.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'अंधश्रद्धा निर्मूलन के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया है'?इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 30%, **कभी कभी** 30% **और कभी नही के लिये** 40% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक अंधश्रद्धा निर्मूलन के लिए कार्यक्रम का आयोजन नहीं करते है** |

2.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'सामाजिक उत्सवों मे सम्मिलित होते है? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 60%, **कभी कभी** 30% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक सामाजिक उत्सवों मे हमेशा सम्मिलित होते है**|

3.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में सहभाग लिया है ? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 10%, **कभी कभी** 30% **और कभी नही के लिये** 60% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में कभी भी सहभाग नहीं लेते है** |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'आरोग्य संबधी मदत की है? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 50%, **कभी कभी** 20% **और कभी नही के लिये** 30% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक आरोग्य संबधी मदत हमेशा करते है** |

5.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'स्वास्थ शिविरों में सहायता प्रदान की है? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 20%, **कभी कभी** 50% **और कभी नही के लिये** 30% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक आरोग्य संबधी मदत कभी कभी करते है** |

6.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'स्वच्छता कार्यक्रम चलाए है'? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 60%, **कभी कभी** 30% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक स्वच्छता कार्यक्रम हमेशा चलते है** |

7.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'स्वास्थ संबधी जानकारी दी हैं;? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 30%, **कभी कभी** 60% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक स्वास्थ संबधी जानकारी कभी –कभी देते है** |

8.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना' इस मापनी के 'ग्रामीण समस्याओं के निवारण हेतु ग्रामीणों का सहयोग दिया हैं'? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा**20%, **कभी कभी** 70% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक ग्रामीण समस्याओं के निवारण हेतु ग्रामीणों का सहयोग कभी-कभी देते है** |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बः अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना के मपिका का विश्लेषण

अ.क्र.	प्रश्न	हमेशा	कभी-कभी	कभी नही
1	गरीबी निवारण हेतु सुझाव जैसे कार्यक्रम में सहकार्य दिया है?	10	70	20
2	झोपड्प ीयों में पानी जैसी समस्या पर कार्यक्रम चलाया है?	10	10	80
3	शारीरिक शक्षण संबधी अ भयान चलाये हैं?	70	20	10
4	कुपोषण जैसी बिमारी की जानकारी दी हैं?	10	10	80
5	स्त्री शक्षण संबधी कार्यक्रम चलाए हैं?	40	50	10
6	पर्यावरण संरक्षण पर कार्यक्रम चलाए हैं ?	70	20	10

बः अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना के मपिका का विश्लेषणात्मक आलेख

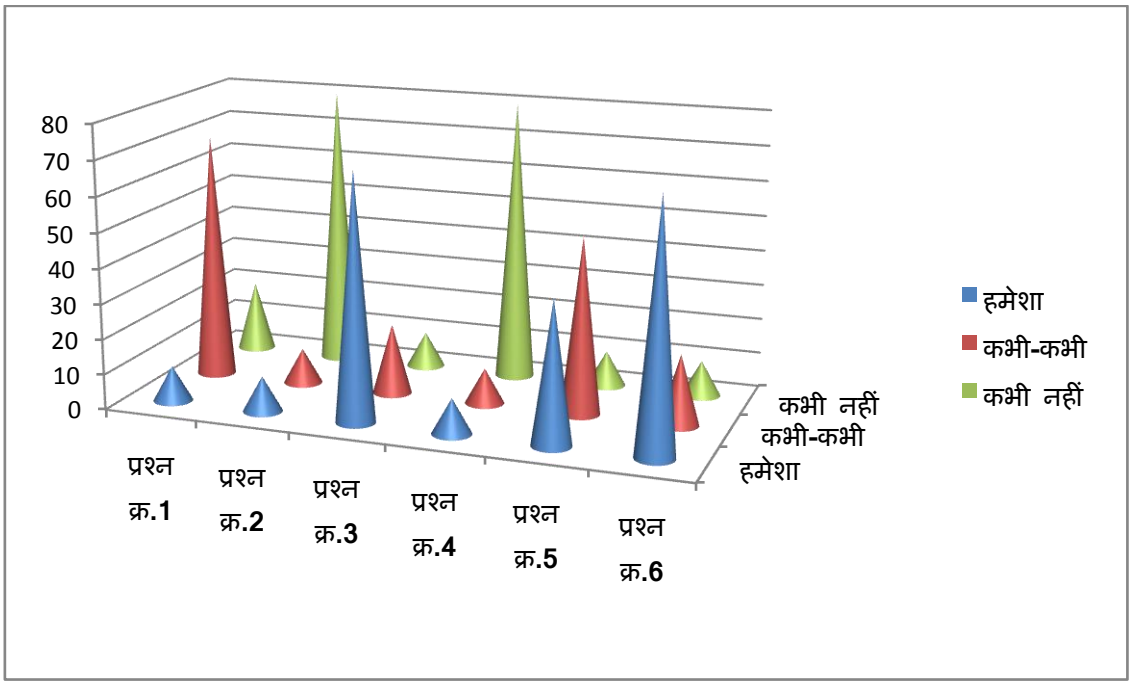

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्लेषण व अर्थनिर्वचन

1.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना' इस मापनी के 'गरीबी निवारण हेतु सुझाव जैसे कार्यक्रम में सहकार्य दिया है;? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 10%, **कभी कभी** 70% **और कभी नही के लिये** 20% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक गरीबी निवारण हेतु सुझाव जैसे कार्यक्रम में कभी कभी सहकार्य देते है|**

2..**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना' इस मापनी के 'झोपड्पट्टीयों में पानी जैसी समस्या पर कार्यक्रम चलाया है? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 10%, **कभी कभी** 10% **और कभी नही के लिये** 80% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक झोपड्पट्टीयों में पानी जैसी समस्या पर कार्यक्रम कभी नहीं चलते है |**

3..**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना' इस मापनी के 'शारीरिक शिक्षण संबधी अभियान चलाये हैं'? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 70%, **कभी कभी** 20% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक शारीरिक शिक्षण संबधी अभियान हमेशा चलाते है|**

4..**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना' इस मापनी के 'कुपोषण जैसी बिमारी की जानकारी दी हैं,? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 10%, **कभी कभी** 10% **और कभी नही के लिये** 80% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक कुपोषण जैसी बिमारी की जानकारी कभी नहीं देते है |**

5.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना' इस मापनी के 'स्त्री शिक्षण संबधी कार्यक्रम चलाए हैं'? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 40%, **कभी कभी** 50% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक स्त्री शिक्षण संबधी कार्यक्रम कभी कभी चलते है |**

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

6.**उपर निर्देशित सारणी में 'अध्यापकों के समाज के प्रति अपनेपन की भावना' इस मापनी के 'पर्यावरण संरक्षण पर कार्यक्रम चलाए हैं'? इस प्रश्न पर मिले प्रतिसाद का प्रतिशत हमेशा** 70%, **कभी कभी** 20% **और कभी नही के लिये** 10% **है।इसका अर्थ यह है कि अध्यापक पर्यावरण संरक्षण पर कार्यक्रम हमेशा चलाते है |**

सिफारिश व सुचना

1. **अध्यापकों द्वारा स्वच्छता, वृक्षारोपनण, वृक्षसंवर्धन जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।**
2. **अध्यापकों द्वारा सामाजिक कार्यो में सहभाग लेना चाहिए।**
3. **अध्यापकों द्वारा अच्छे समाज संपर्क क्षमता बनाये रखते का प्रयास किया जाना चाहिए।**
4. **अध्यापक पर्यावरण संरक्षण पर कार्यक्रम चलाने चाहिए |**
5 **अध्यापकों को स्त्री शिक्षण संबधी कार्यक्रम चलाने चाहिए |**
6. **अध्यापकों को समाज के प्रति जागरूक होना चाहिए |**
7. **समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाना चाहिए |**

संदर्भ ग्रंथ सूची

*आगलावे, प्रदिप (2000): **शैक्षणिक संशोधन पद्धती व तंत्रे, विद्या प्रकाशन, पूणे***
*बापट, या.मो.(1975): **शैक्षणिक संशोधन पद्धती व तंत्रे, विद्या प्रकाशन, पूणे***
*भटनागर, प्रो. सुरेश (2004): **भारत में शिक्षा का किवास, सूर्या प्रकाशन.***
*कदम, चा.प.(1989): **शैक्षणिक संस्थाशस्त्र, नूतन प्रकाशन.***
*कुण्डले , म.ना. (1996): **शैक्षणिक तत्वज्ञांन व शैक्षणिक समाजाशास्त्र, आनंद मुद्रणाल्य, सदाशिव पेंठ***
*मुळे, रा.श. व उमाठे, वि.तु. (1997): **शैक्षणिक संशोधनाची मूल तत्वे, विद्या बुका, औरंगाबाद***
*नाकतोडे, किरण (1997):**शालेय संशोधन शैक्षणिक संरचना आणि आधुनिक विचार प्रवाह, विद्या प्रकाशन, नागपूर***
*पाण्डेय, रामशुक्ल (2005): **मूल्य शिक्षा, सुर्या प्रकाषन***
*पाण्डेय, रामशुक्ल (2008): **शिक्षा मनोविज्ञाना, सुर्या प्रकाषन***
*सक्सेना, एन.आर.एस.(2005): **उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षण, सुर्या प्रकाशन.***

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सक्सेना, एन.आर.एस. *(2008):* ***उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षण, सुर्या प्रकाशन***

शर्मा, बी.एल. *(2004):* ***हिंदी शिक्षण, सुर्या प्रकाशन***

शर्मा, आर.ए. *(2005):* ***शैक्षक एवं मानसिक मापन, सुर्या प्रकाशन***

https://www.google.co.in/search?sxsrf=ACYBGNRJUcqfmGqJ3buLb59cLECAek1Mzg%3A1581760028413&source=hp&ei=HL5HXsLXFoyX4-EP2cixgA8&q=adhyapak+shiksha&oq=adhyapak+shiksha&gs_l=psy-ab.3..0l6j0i10j0l3.4310.9737..10946...3.0..0.839.6003.0j3j4j5j0j2j2.....0....1..gws-wiz.....10..35i362i39j0i131.6Km9uI9R2oA&ved=0ahUKEwjC1fGko9PnAhWMyzgGHVlkDPAQ4dUDCAU&uact=5

https://khsindia.org/india/hi/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%97/%E0%A4%85%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%95-%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%97.html

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies